डा. प्रदीप कुमार राय (एसोसिएट प्रोफेसर, रोहतास महिला कॉलेज, सासाराम)

विषय - राजनीतिशास्त्र

कक्षा - बी. ए. (प्रतिष्ठा) भाग-03 ; सत्र 2019-20

पेपर - 08

दिनांक - [redacted] 09.07.2020

टॉपिक - उग्र राष्ट्रवादियों की राजनीतिक विचारधारा और साधन—

उग्र राष्ट्रवादियों की राजनीतिक विचारधारा उदारवादियों से नितांत भिन्न और कुछ अंशों में विपरीत थी और ब्रिटिश साम्राज्य के साथ सहयोग के विरोधी थे। विपिन चन्द्र पाल की दृष्टि में युद्ध के बिना भारत की स्वतंत्रता मिलना नितांत असंभव है अतः क्योंकि अपने आर्थिक हितों के चलते ब्रिटिश भारत पर राजनीतिक नियंत्रण बनाये रखना चाहते थे। वे उनकी न्यायप्रियता में भी अविश्वास करते थे तथा उनका विश्वास था कि वे केवल दबाव की भाषा समझते हैं।

उदारवादियों के ब्रिटिश शासन में सुधार की अपेक्षा के विपरीत उग्रवादी इसके अंत के पक्षधर थे और पूर्ण स्वराज के पक्ष में थे। सर हेनरी कॉटन के शब्दों में, उग्रवादी भारत में सब प्रकार से मुक्त और स्वतंत्र राष्ट्रीय शासन प्रणाली की स्थापना करना चाहते थे।

उग्रवादियों के साधन— राजनीतिक विचारधारा और लक्ष्य की दृष्टि से अंतर होने के साथ-साथ साधन के मामले में भी दोनों में विभिन्नतायें थीं। उग्रवादियों का यह मानना था कि संवैधानिक साधनों एवं लोकतांत्रिक प्रवृत्तियों के सहयोग से भारत की स्वतंत्रता प्राप्त नहीं की जा सकती है यह तो दिवास्वप्न के समान होगा। वे उदारवादियों के प्रार्थनाओं, स्मृति-पत्रों और प्रतिनिधि मंडलों की नीति को 'राजनीतिक भिक्षावृत्ति' मानते थे। विपिन चन्द्र पाल के अनुसार, 'स्वराज स्वावलंबन के आधार पर ही प्राप्त किया जा सकता है। उग्रवादी अपनी राष्ट्रीय शक्तियों को इस प्रकार संगठित करना चाहते थे ताकि कोई भी शक्ति जो हमारे विरुद्ध हो हमारे सम्मुख झुकने को बाध्य हो जाये।' उनके द्वारा निष्क्रिय प्रतिरोध का मार्ग अपनाकर सरकार के कार्य को कई प्रकार से ठप्प किया जा सकता है। सारे देश में ऐसी भावना विकसित करने के पक्षधर थे जिससे समस्त सरकारी कार्यालयों में हड़ताल की जा सके।

बहिष्कार, स्वदेशी और राष्ट्रीय शिक्षा— उग्रवादियों के साधन उदारवादियों के अनुनय-विनय, प्रार्थना के विपरीत बहिष्कार, स्वदेशी और राष्ट्रीय शिक्षा थे। बहिष्कार के आंदोलन की तो मुख्य वृत्ति विदेशी वस्तुओं के बहिष्कार की ही बात थी किंतु व्यापक तौर पर इसमें सरकार के साथ असहयोग, सरकारी नौकरियों, प्रतिष्ठाओं तथा उपाधियों का बहिष्कार भी शामिल था ताकि उनपर सीधा आघात

Scanned with CamScanner

शैक्षणिक साधन के मामले में उग्रवादी भारतीय ~~क~~ धार्मिक और ~~सांस्कृतिक~~ नव जागरण के पक्षधर थे और सांस्कृतिक दृष्टि से गुलाम बनाने वाली पाश्चात्य शिक्षा का विरोध कर राष्ट्रीय शिक्षा प्रणाली का समर्थन किया और इसी उद्देश्य से लोकमान्य तिलक ने 'दक्षिण शिक्षा समाज' की स्थापना की।

इन सबके परिणामस्वरूप व्यापार पर काफी कुप्रभाव पड़ा। इसमें मंदी आ गई। ब्रिटिश हितों पर कुठाराघात हुआ। भारतीय उद्योग को शक्ति मिली तथा विरोध को एक नया प्रसार एवं अधिक कारगर हथियार मिला।

<u>मूल्यांकन</u> — उग्रवाद के जन्म एवं विकास का भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन पर पड़े प्रभाव से एक नई चेतना और जागृति आई। ~~१~~ यह एक जनवादी आंदोलन का रूप ग्रहण कर लिया राष्ट्रीय आंदोलन में कांग्रेस को व्यापकता मिली जिससे इसकी पैठ मध्यम वर्ग एवं जनसाधारण तक हो गई। महात्मा गांधी द्वारा अपनाया गया असहयोग आंदोलन का द्वार और स्वदेशी से ही विकसित हुआ। इससे नवयुवकों में नई सांस्कृतिक चेतना जगी एवं राष्ट्रीयता का भाव जगा। ब्रिटिश सरकार को मार्ले-मिण्टो सुधार लाना पड़ा। इस काल के नेताओं विशेषकर लाल-बाल-पाल के त्याग, संघर्ष और प्यार ने उन्हें लोकनायक बना दिया। वैधानिक आंदोलन को भी वास्तविक राष्ट्रीय आंदोलन और जनआंदोलन का स्वरूप प्राप्त हो सका। हालांकि राजनीति के साथ धर्म के समन्वय, ब्रिटिश अधिकारियों का मुसलमानों को बहकाना, हिंदू राष्ट्र के भय आदि से मुस्लिम जनता आंदोलन के प्रति निरपेक्ष और कुछ अंश तक विरोधी हो गयी।